अमृत प्रार्थना
राधाजी से

भगवती राधाजी का अवतरण दिवस है।
तो हम सबको भी राधा जी से प्रार्थना करनी चाहिए, स्तुति करनी चाहिए कि आपकी जो भगवान के चरणों में अनन्य भक्ति है, अनन्य प्रेम है,निष्काम प्रेम है वह अनन्य भक्ति ,वह अनन्य प्रेम हम लोगों के भी हृदय में भगवान के प्रति हो।
जैसे गोपियां चाहे घर में रहीं ,जहां भी रहीं ,वहीं रहकर परमात्मा से प्रेम हो जाए, तन-मन-वचन हृदय परमात्मा का ही हो जाए।
जिस प्रकार से बांसुरी खाली हो गई उन्हें आपको समर्पित कर दी वैसे ही हम भी खाली हो जाएं, यह शरीर रुपी बांसुरी को हम भी भगवान को समर्पित कर दें। भगवान इसे स्वीकार करें जिस प्रकार से भगवान ने गोपियों के प्रेम को स्वीकार किया।
वैसे ही भगवान हम सबको स्वीकार करें!
स्वीकार करें!स्वीकार करें!